CERTIFICATE

Certify that the **M**inor **R**esearch **P**roject entitled A FEMINISTIC ANALYSIS OF THE DEPICTION OF RADHA IN HINDI-MALAYALAM POETRY - WITH SPECIAL REFERENCE TO KANUPRIYA & RADHAYEVIDE is a bonafide piece of research work done by **Dr. Issac K. S.** Associate Professor, Department of Hindi of this college. The project is undertaken with the financial assistance of University Grants Commission.

Changanassery

28-9-2015

Rev. Dr. Tomy Padinjareveettil

Principal

सशक्तीकरण को युगधर्म माननेवाला है। हिन्दी और मलयालम की कविता इसका उत्तम गवाह है। दोनों भाषाओं के साहित्यकार नारी-मुक्ति की चेतना को जागृत करने और उन्हें नई जीवन-दृष्टि देने का सक्षम एवं सार्थक प्रयास किये हैं। पहले स्त्री का जीवन पिता, पति और पुत्र के आसरे में था ; पुरुष-सत्तात्मक समाज के उत्पीडन में उसका दम घुटता था। आर्थिक पराधीनता ने स्त्री की अस्मिता को पनपने नहीं दिया। लेकिन नवजागरण की लहर और लेखकों के हस्तक्षेप से समाज में स्त्री-पुरुष की सहभागिता का महत्व कायम हुआ है और उन्हें एक सिक्के के दो पहलू मानने लगे है।

स्त्री और पुरुष समाज का अटूट अंग होते हैं। नर के बिना नारी का, और नारी के बिना नर का जीवन अधूरा है। दोनों परस्पर पूरक है। किसी भी समाज या देश की स्थिति को वहाँ की नारियों की स्थिति से आँक सकते हैं। पश्चिमी शिक्षा और सभ्यता के संपर्क से लोगों में नयी जागृति पैदा होने लगी। भारतीय नारी भी यह समझने लगी कि त्याग, बलिदान, दया, सहानुभूति आदि मानवीय मूल्यों से चिपटे रहने से उसका उत्थान या उत्कर्ष संभव नहीं है। वह समझने लगी कि पति और परिवार ही उसकी सीमा नहीं वरन् देश, समाज और जाति के विकास के कार्यों में भी उसका योगदान अनिवार्य है। उसे यह बोध हुआ कि घर की चहार दीवारी को तोडकर बाहरी दुनिया में उसे आना चाहिए। महादेवी वर्मा के शब्द है कि "वास्तव में स्त्री अब केवल रमणी या भार्या नहीं वरन् घर के बाहर भी समाज का एक विशेष अंग तथा महत्वपूर्ण नागरिक है"।

सभ्यता के विकास के साथ नारी-संबन्धी मान्यताओं, अवधारणाओं और मानसिकताओं में काफी अंतर आया। बौद्धिक स्तर पर भी नारी पुरुष के समकक्ष बन गयी। आधुनिक शिक्षित नारी पुरुष के अन्याय और अत्याचारों को सहने के लिए तैयार नहीं है। उसे अपनी अस्मिता का ज्ञान और बोध होता है। वह पति की दासी बनने की नहीं बल्कि अर्द्धांगिनी एवं समान अधिकारिणी सहधर्मिणी बनने की इच्छा रखती है। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में कार्यशील महिलाओं की संख्या में काफी बढौती आयी है।

अपनी प्रबुद्धता के बावजूद आज की नारी शोषण और दयनीयता से मुक्त नहीं है। वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाये रखने केलिए प्रयत्नरत है। स्त्रीवाद या फेमिनिजम का रूपायन यहाँ से होता है। यह युगों से चले आ रहे पुरुष-प्रभुता, शोषण, अत्याचार और उत्पीडन की प्रतिक्रिया है। समाज में नारी को पुरुषों की तरह मान-सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त करना फेमिनिजम का लक्ष्य होता है। यह सत्ता के सारे चिह्नों का निराकरण करके जनतांत्रिक समानता की प्रतिष्ठा का नारा खडा करता है। विश्वव्यापी नारी-मुक्ति आन्दोलन के फलस्वरूप स्त्रियों में यह चेतना जागी है कि पुरुष के समान उसका भी अपना अलग व्यक्तित्व, अस्तित्व और पहचान होता है।

UôÊ´ÉªÉÉå EòÉä ¦ÉÒ विखण्डित (डिकन्स्ट्रक्ट) करना जरूरी है'। भारतीय समाज में नारी की स्थिति युगीन आदर्शों और जीवन-मूल्यों के साथ बदलती रही है। प्रेम की दिव्यतम और नारीत्व की पूर्णतम प्रतिमा राधा पर केंद्रित उपजीव्य रचनाएँ इसका स्पष्ट मिसाल ½èþ*

[illegible] अपेक्षा अंग-अंग, आदि को ध्यान में रखते हुए, दो अलग अद्ययायों में ÊEò ªÉÉ MÉ ªÉÉ ½èþ* 'राधयेविटे?' के विशद अध्ययन के पूर्व मलयालम के प्रमुख कवियें की कविताओं में स्त्री-चित्रण का सामान्य परिचय देना भी अनिवार्य माना है। [illegible]

[illegible] Eäò ºÉ¡òãÉ ÊxÉ´ÉÉÇ½þ Eäò ÊãÉB S.B College Changanassery, J.N.U, Delhi University, Bangalore University, Mysore University, Central Hindi Institute Mysore, C.U.S.A.T, Kerala University, S.S.U.S. Kalady, Maharajas College Ernakulam. N.S.S Hindu College Changanassery , St.Thomas College Pala VÉè ºÉÒ [illegible] S.B College, Changanassery Eäò [illegible]

[illegible] [illegible]

28-9-15

कनुप्रिया : रागसंबन्ध की अभिनव अभिव्यक्ति

कनुप्रिया : रागसंबन्ध की अभिनव अभिव्यक्ति

कनुप्रिया धर्मवीर भारती की सुप्रसिद्ध काव्यकृति है। यह राधा-कृष्ण के प्रणय पर आधारित है। राधा-कृष्ण के प्रणय पर आधारित होने पर भी यह कृति नवीन संवेदना से युक्त है। ऊपरी दृष्टि से कनुप्रिया परंपरायुक्त है। क्योंकि पूरी रचना में कनुप्रिया -राधा- की तरल स्मृतियाँ, मनःस्थितियाँ और अनुभूतियाँ ही चित्रित की गयी है। कृष्ण के ऐतिहासिक व्यक्तित्व की जाँच-परख का आधार राधा का सहज मन है। राधा ने सहज मन से जीवन जिया है। उसी सहज की कसौटी पर वह कृष्ण के समस्त जीवन को कसती है।

प्रणय की प्रतिष्ठा :

प्रणय एक प्रकार का मनोवेग है। उसे चाहे छिछला या हल्का बना सका है। राधा-कृष्ण को नायक-नायिका बनाकर भक्ति रस या श्रृंगार रस से पूर्ण बहुत सारी कृतियाँ हिन्दी साहित्य में आयी हैं। घर्मवीर भारती ने कनुप्रिया में मात्र राधा को ही स्थान देकर उसे नायिका बनाया है। पाठक का कृष्ण के साथ कोई सीघा रिश्ता नहीं होता है। राधा के आत्मकथन और चिन्तन के जरिए कृष्ण को हम देखते हैं और पहचानते हैं ; उसकी कौशोर्यसुलभ मनःस्थितियों के माध्यम से चरम तन्मयता के क्षण से साक्षात्कार करते हैं। राधा की प्रणयानुभूतियों को नयी अभिव्यक्ति-शैली में अभिनव भाव-भंगिमाओं के साथ इसमें उद्‌घाटित किया गया है। "कनुप्रिया में प्रणय की शारीरिक और मानसिक अनुभूतियों का अंकन ही नहीं है बल्कि उन अनुभूतियों को ग्रहण करने के उपरांत जो चिंतन, जो दर्शन मन में जन्म लेता है उसका प्रभावी उद्‌घाटन भी है और इस सारी प्रक्रिया को हम कनुप्रिया के चिन्तनशील मन से जानने लगते हैं। उसकी पैनी और अर्थपूर्ण दृष्टि से देखने लगते हैं। उसकी पैनी और अर्थपूर्ण दृष्टि से देखने लगते हैं। वह विश्वव्यापी चिन्तन हमें भी बाध्य करता है, अनगिनत अनुत्तरित -क्यों- के उत्तर तलाशने के लिए तथा कनुप्रिया के वैचारिक, भावात्मक संघर्ष के आलोक में अपने मन में निर्माण होनेवाले संघर्ष को समझाने के लिए"[1]। कनुप्रिया में उस चरम तन्मयता के क्षण की खोज होती है जो सारे बाह्य इतिहास-प्रक्रिया से ज्यादा मूल्यवान सिद्ध हुआ है। युद्ध के जरिए इतिहास निर्माण के लिए निकले कृष्ण के प्रयत्न

---

१. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में प्रणय-चित्रण - पद्‌मजा घोरपडे, पृ. ८५

लोभी, मेरे लीलाबन्धु, एकमात्र अंतरंग सखा, मेरे रक्षक, हे दिव्य, मेरे सहचर, मेरे साँवले समुद्र, मेरे प्यार, मेरे प्रियतम,मेरे उत्तर, मेरे धैर्य, मेरे प्रभु, महान कनु। ये संबोधन प्रणयिनियों के भावात्मक अंतरंगता की अभिव्यक्ति और उसकी ऊष्मा को रेखांकित करते हैं। इसके साथ अपने प्रणय-सखा के विविधांगी व्यक्तित्व को उजागर करने की उत्कट चाह भी इन संबोधनों के पीछे निहित है।

प्रणय-चित्रण के पहलू :

कनुप्रिया में कवि युद्ध और संघर्ष के स्थान पर प्रणय की प्रतिष्ठा करता है। जहाँ युद्ध असफल होता है वहाँ प्रेम की जीत होती है। युद्ध के जरिए इतिहास-निर्माण के लिए निकले कृष्ण के प्रयत्न को राधा व्यर्थ सिद्ध करती है। युग-प्रवर्तक कृष्ण का स्वरूप राधा की सहज कौशोर्यसुलभ आत्मविभोरता से मेल नहीं खाता है। फिर भी वह उसको उसी सहजता के स्तर पर ही ग्रहण करती है। क्योंकि वह जानती है कि यही एकमात्र सत्य है। डॉ.कुमार विमल की दृष्टि में ''इसकी सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमें अतिप्रसिद्ध पौराणिक कथा या लोकप्रिय काव्यरूढी की तरह प्रयुक्त कथारूपक के सहारे आधुनिक मानव की युद्धोत्तर अवश स्थिति को कुरेद-कुरेदकर सामने रखा गया है। इसलिए कनुप्रिया में केवल युगल-विलास का परंपरित चित्रण नहीं है''।

कनुप्रिया में प्रणय के दोनों पक्षों (संयोग और वियोग) का चित्रण हुआ है। संयोग-पक्ष में उन्मुक्तता, स्वच्छन्दता, कौशोर्यसुलभ रूपासक्ति, रोमांस एवं तन्मयता का प्रगाढ चित्रण होता है। ध्यान देने की बात है कि संयोग-पक्ष का सारा चित्रण सीधा नहीं करके अतीत-स्मृतियों के माध्यम से हुआ है। राधा के लिए महत्व भी उन्हीं क्षणों का है जिनमें समस्त बाह्य अतीत, वर्तमान और भविष्य सिमटकर पुंजीभूत हो गए हैं। संयोगावस्था के चित्रण में प्रचण्ड उद्दामता के संवर्द्धन के लिए यथानुपूर्व एवं नवीन दोनों प्रकार के माध्यम अपनाए है। ''हाँ चन्दन / तुम्हारे शिथिल आलिंगन में / मैं ने कितनी बार इन सबको रीतता हुआ पाया है / मुझे ऐसा लगा है/ जैसे किसी ने इस जिस्म के बोझ से / मुझे मक्त कर दिया है / मैं मात्र एक सुगंध हूँ ''[1]। (पृ. २७) ''मैं ने कसकर तुन्हें पकड लिया है / और जकडी जा रही हूँ / ... और यह मेरा कसाव नियम है / और अन्धा और उन्माद भरा और मेरी बाँहें / नागवधू की गुंजलक की भाँति / कसती जा रही है / और तुम्हारे कंधों पर, बाँहों पर, होठों पर / नागवधू की शुभ्र दंत-पंक्तियों के नीले नीले चिह्न / उभर आये हैं''[2]। (पृ. ५१) यह भी ध्यातव्य है कि कनुप्रिया

---

१. कनुप्रिया - धर्मवीर भारती , पृ. २७

२. वही , पृ. ५१

सकता है, क्योंकि वह सार्वदेशिक और सार्वकालिक है"[1]।

कनुप्रिया का वियोगपक्ष परंपरा का अनुसरण मात्र नहीं है। वह जीवन के नव्यतम मानदंडों का संवाहक बन पडा है। कनुप्रिया की राधा भोली-भाली होने पर भी विवेकशीला एवं तर्कशीला है ; भावाकुल होकर भी एक जीवन-पद्धति की समर्थक है। विविध भावभूमियों को पार करके उसका प्रेम औदात्यभूमि का संस्पर्श करता है। उसे विश्वास है कि वह केवल तन्मयता के क्षणों की संगिनी बनकर नहीं रह जाएगी, बल्कि इतिहास-निर्माण में भी कनु को सहयोग देगी और उसे सूनेपन से बचाएगी। कनु के साथ उसका संबन्ध जन्म-जन्मान्तर का अटूट संबन्ध है। इसलिए वह परंपराओं में बंध निर्जीव होकर केवल केलिसंगिनी बने रहना नहीं चाहती है। उसकी यह मानसिकता उसे आधुनिक बनाती है।

कृष्ण महाभारतयुद्ध का संचालन करने चले गये और राधा अकेली रह गयी। वह कृष्ण को विस्मृत नहीं कर पायी। कृष्ण का सांवरा ज्स्मि, चन्दन बाँहें, अधखुली दृष्टि और धीरे-धीरे प्रस्फुटित जादूभरे होंठ उसे स्मरण है। जिन रूखी अलकों से अपने समय की गति को बाँधा था उन्हीं काले नागपाशों से क्षण-प्रतिक्षण बार-बार डसी हुई वह लीलाभूमि और युद्धक्षेत्र के अलंघ्य अलंध्य अंतराल में एक सेतु-मात्र रह गयी। इस संदर्भ में श्री रामदरश मिश्र का यह निरीक्षण सही लगता है कि "कनुप्रिया राधा के प्रेम-संवेदन के माध्यम से जीवन को समझने का एक सफल प्रयत्न है"[2]।

चिरंतन स्त्री-पुरुष संबन्ध की गाथा :

स्त्री-पुरुष का संबन्ध चिरपुरातन है। जीवन का मूल ही यह संबन्ध होता है। यह सार्वदेशिक और सार्वकालिक है। इसकी सफल अभिव्यक्ति कनुप्रिया में किया गया है। पौराणिक पात्र राधा और कृष्ण के माध्यम से कवि ने यह कार्य किया है। कृष्ण की जन्म-जन्मान्तर की रहस्यमयी लीला की एकान्त संगिनी है राधा। वह अपने को कृष्ण के सामने पूर्ण रूप से समर्पण करती है। "कृष्ण को वह अपना रक्षक, बन्धु और सहोदर मानती है"(कनुप्रिया , पृ-३४)। कनु ही उसका एकमात्र अंतरंग सखा है। अपने प्रियतम के पास जाते समय राधा का मुख लाज से आरक्त हो जाता है और वह कहती है - "मैं अक्सर तुमसे केवल तम के प्रगाढ परदे में मिली / जहाँ हाथ को हाथ नहीं सूझता था / मुझे तुमसे कितनी लाज लगती थी,/ पर हाय मुझे क्या मालूम था / कि इस वेला जब अपने को / अपने से छिपाने के लिए मेरे पास/

---

१. विवेक के रंग - देवीशंकर अवस्थी, पृ - १०९

२. धर्मवीर भारती की साहित्य-साधना - सं. पुष्पा भारती, पृ.- ५१२

जीवंत एवं विकासोन्मुख रखने का माध्यम मात्र हैं। लेकिन राधा इस महान तथ्य से अनभिज्ञ बावली लडकी है और वह इसका लौकिक अर्थ ही ले बैठती है। राधा के बावलेपन पर कृष्ण कभी खिन्न होता है, कभी चुप्पी साध लेता है और कभी हँसता है और राधा को प्यार से अपनी बाँहों में कस लेता है। अब राधा उस सुख के अनुभव केलिए बार बार नादानी करने का निश्चय करती है। वह कहती है - "आम का वह बौर / मौसम का बौर था / अछूता, ताजा, सर्वप्रथम!/ मैं ने कितनी बार तुममें डूब-डूबकर कहा है / कि मेरे प्राण! मुझे कितना गुमान है / कि मैं ने तुम्हें जो कुछ दिया है / वह सब अछूता था, ताजा था / सर्वप्रथम प्रस्फुटन था"(कनुप्रिया , पृ-३०)। अपने प्रियतम को समर्पित करनेवाली भेंट के प्रति प्रत्येक नारी सतर्क और सचेत रहती है। राधा के उपर्युक्त शब्दों में समस्त स्त्रियों की सतर्कता छलकती है। यह तो स्पष्ट है कि कनुप्रिया की राधा "न जयदेव की श्रृंगारप्रिय प्रेम प्रगल्भा नायिका है, न विद्यापति की कामविमोहिता सौन्दर्यमूर्ति है, न ब्रज की गतियों में कृष्ण के साथ आँखमिचौनी में व्यस्त सूर की नवल किशोरी है, न बतरस की लालची हो कृष्ण की मुरली लुकाकर रखनेवाली बिहारी की वाक्पटु राधा है बल्कि उसकी अवतारणा इन सबसे भिन्न व्यक्तित्व की धारक राधा के रूप में हुई। वह युगीन संवेदना को वहन करनेवाली और मशीनी जीवनमूल्यों को सर्वथा नकारनेवाली कनुप्रिया के रूप में हमारे समक्ष आई"[1]।

कनुप्रिया(राधा) प्रेम का प्रतीक है। वह कृष्ण के जीवन की प्रेरणामूर्ति है। उसके सहयोग के बिना कृष्ण इतिहास को सार्थकता नहीं दे सकते। प्रिय को महान बनाने में प्रिया का हाथ सहारा देता है। पुरुष के उत्थान में नारी का हमेशा रहता है। कनुप्रिया कृष्ण से कहती है -"लेकिन जब तुम्हीं ने बन्धु / तेज से प्रदीप्त होकर इन्द्र को ललकारा है, / कालिय की खोज में विषैली यमुना को मथ डाला है / तो मुझे अकस्मात लगा है/ कि मेरे अंग अंग से ज्योति फूटी पड रही है / तुम्हारी शक्ति तो मैं ही हूँ" (कनुप्रिया, पृ-३६)। कनुप्रिया समझती है कि वह कनु का संबल है, उसकी योगमाया है, इस निखिल पारावार में वह शक्ति-सी, ज्योति-सी, गति-सी फैली हुई है। वह अनन्त काल से अनन्त दिशाओं में कनु के साथ चलती चली आ रही दिग्वधू है, कालवधू है। वह अनन्त काल तक इसी रूप में चलती चली जाएगी। वह कृष्ण को संबोधित करके कहती है कि तुम्हारे संपूर्ण अस्तित्व का अर्थ तुम्हारी सृष्टि मात्र है। तुम्हारी संपूर्ण सृष्टि का अर्थ तुम्हारी इच्छा मात्र है और तुम्हारी संपूर्ण इच्छा का अर्थ केवल मैं ही हूँ। राधा अपने को सृजन-संगिनि में प्रकृति ही मानती है। उसका नारी-मन कभी-कभी उसे सशंकित बना देता है। आदिम भय से मुक्ति मिलने पर वह केलिसखी बनकर प्रत्यक्ष होती है और निखिल सृष्टि के अपार विस्तार में कनु के साथ ही रहती है।

---

१. धर्मवीर भारती कनुप्रिया तथा अन्य कृतियाँ - डॉ.ब्रजमोहनशर्मा ,पृ-६३

युद्ध से टूटते व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति :

धर्मवीर भारती ने कनुप्रिया में राधा की सहज तन्मयता के क्षणों को चित्रित किया है। महाभारतयुद्ध में कृष्ण की भूमिका को राधा तन्मयता के माध्यम से आंकती है। युद्धरत कृष्ण के व्यक्तित्व को सहजता की कसौटी पर कसना विरोधाभास लगने पर भी असंगत नहीं है। क्योंकि "प्रभु का व्यक्तित्व ही इसीलिए असाधारण है कि वह दोनों विरोधी स्थितियाँ बिना किसी सामंजस्य के जी सकने में समर्थ है"(कनुप्रिया - भूमिका)। कृष्ण की कल्पना पूर्ण-पुरुष के रूप में होता है। मानव-जीवन का ऐसा कोई अनुभव नहीं जो कृष्ण ने न किया हो। गाय चराने से लेकर योग की चरम साधन तक, कोई ऐसी उपलब्धि नहीं जो उनमें न मिलती हो। कृष्ण के संबन्ध में श्री विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने लिखा है कि - "कृष्ण की कल्पना पूर्ण-पुरुष के रूप में की गयी है, इसलिए वह शान और प्रेम दोनों के आधार है। वह गीता रचते है और साथ ही वह ललित कलाओं और कोमल वृत्तियों के श्रोत भी है। .....वह एक साथ सहज और जटिल है, मेघावी और सरल है, विजेता और रगछोड है, राजा और ग्वाल है, दुराचारी और योगी है, कामी और संयमी है। दरिद्रता और समृद्धि, अपमान और सम्मान, अलगाव और प्यार सभी विरोधी तत्वों और शक्तियों का उनमें अधिष्ठान दिखाया गया है"[1]।

महायुद्ध की विभीषिका में व्यक्ति के अकेलापन की तीव्र अभिव्यक्ति कनुप्रिया (राधा) के मध्यम से हुई है। वह उन अनेक प्रियतमाओं का प्रतीक है जो समूची इतिहास-प्रक्रिया से अकेली पीछे छूट गयी है। कनुप्रिया कदम्ब के नीचे खडे कनु को प्रणाम करने केलिए जाती थी। लेकिन आज उस रास्ते से कृष्ण की अठारह अक्षौहिणी सेनाएँ लता-कुंज को रौंदती, धूल फैलाती हुई युद्ध में भाग लेने जा रही हैं । जिस आम्र वृक्ष की डाल पर टिक कनु ने राधा को बुलाया था उस आम की डाल सदा के लिए काट दी जाएगी। क्येंकि कृष्ण के सेनापतियों के वायुवेगगामी रथों की गगनचुंबी ध्वजाओं में यह नीची डाल न अटके। राधा पथ के किनारे खडा छायादार पावन अशोक-वृक्ष खण्ड-खण्ड हो जाने पर चिंतित है। यदि ग्रामवासी सेनाओं के स्वागत में तोरँ नहीं सजाएँ तो आशंका है, सारा ग्राम ही उखाड दिया जाय। युद्ध के इस भीड-भाड में कनुप्रिया और उलका प्यार नितांत अपरिचित हो गया है। जमुना में कनुप्रिया अपने को घण्टों निहार करती थी। वहाँ अब रोज शस्त्रों से लदी हुई अगणित नौकाओं की पंक्ति ही है। वह पूछती है - "हारी हुई सेनाएँ, जीती हुई सेनाएँ / नभ को कंपाते हुए, युद्ध-घोष, क्रंदन-स्वर / भागे हुए

---

१. धर्मवीर भारती - सं. लक्ष्मणदत्त गौतम , पृ - १८०

के क्षणों में कृष्ण के वक्ष में मुँह छिपाकर कही गयी बातें उसे अब निरर्थक सी लगती है। कृष्ण के महान बनने में राधा का अस्तित्व और व्यक्तित्व टूटकर बिखर गये हैं। "राधा का चरित्र आध्यात्मिक और श्रृंगारिक स्वरूपों की भूल-भुलैयों से बाहर आकर अपनी सनातन उपेक्षा के व्यथा के विषैले घूँट को पचाकर, अपने अस्तित्व की रक्षा की सौम्य चाह प्रकट करनेवाली स्त्री के चरित्र के रूप में अंकित हो गया है"[1]।

भारती के पाश्चात्य मस्तिष्क ने राधा को क्षणिक सुख-कांक्षी के रूप में प्रस्तुत करके क्षणवादियों को मान्यता दी है। कृष्ण के साथ बीते केलिक्षणों को कनुप्रिया महत्वपूर्ण मानती है। "कौन था वह / जिसके चरम साक्षात्कार का एक गहरा क्षण / सारे इतिहास से बडा था, सशक्त था"(कनुप्रिया , पृ-५८)। इसप्रकार क्षणजीविता के प्रति अभिनिवेश प्रकट करनेवाले कवि का भारतीय मानस उस क्षण को चिरंतन का परिवेष देता है और पाश्चात्य अस्तित्ववादियों की सीमा से बाहर आता दिखाई पडता है। अतः कनुप्रिया और उसकी राधा को पूर्ण रूप से पाश्चात्य अस्तित्ववाद से प्रभावित मानना अनुचित ही नहीं अन्याय भी है। पश्चिम की पहचान भौतिकवादी के रूप में रही है और भारत की आध्यात्मिकता उसे पश्चिम से अलग करती है।

कनुप्रिया का मूल प्रेरणा-श्रोत भागवत है। भागवत में प्रतिष्ठित राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंग के माध्यम से मानव-जीवन में समरसता की प्रतिष्ठा करना कवि का मकसद रहा है। एक साक्षात्कार में कवि ने कहा है - "गीता में युद्ध के माध्यम से समरसता प्रतिष्ठित होती है, निर्वेद प्रतिष्ठित होता है, और भागवत में प्रेम, चरम प्रेम के माध्यम से वही समरसता और (वही) निर्वेद प्रतिष्ठित होता है। अतः कनुप्रिया में आप देखेंगे कि जो प्रयास है, वह यही कि राधा के उस प्रेम का सारा जो विशाल रूप है, कृष्ण के प्रेम का जो विशाल रूप है, उनके समर्पण में जो गहरे से गहरे अर्थ रहे हैं और जिसप्रकार समस्त सृष्टि की सारी सृजन और उत्पादन-क्रिया और समस्त सृष्टि के सौन्दर्य, उसके प्रस्फुटन और उसके विकास की प्रक्रिया चलती है- इन सबका प्रतीक उनका प्रेम बन जाता है। उस प्रेम के लिए राधा उनको पुकारती है और साथ ही साथ आश्वासन देती है कि इतिहास के हर मोड पर कनु के साथ रहेगी, कनु की सहभागिनी रहेगी। यह पुराऩी राधा आधुनिक युग की राधा है, जिसमें कि प्रेम भी है, समर्पण भी है और नया संकल्प भी"[2]।

---

१. कनुप्रिया एक मूल्यांकन - सुलभा बाजीराव पाटील, पृ - ८८

२. धर्मवीर भारती - सं.प्रभाकर श्रोत्रिय , पृ - ४२

क्योंकि उसने तन्मयता के क्षणों में तन्मयी होकर ही सार्थकता संकल्पित की है। जीवन के ये सुंदर और अनूठे भुक्त क्षण उसके स्मृतिपटल से हटाये नहीं हटते। राधा का यही सहज प्रेम और अन्तरीण तारतम्य प्रस्तुत काव्य-रचना के प्रमुख आयाम बन गए हैं"[1]।

मिथकीयता :

कनुप्रिया की मूल संवेदना निःछल प्रेम पर आधारित है। उसकी अभिव्यक्ति के लिए राधा-कृष्ण के प्रणय-प्रसंग का उपयोग किया गया है। राधा-कृष्ण अनंत काल से स्वीकृत प्रेम-मूर्ति है। राधा और कृष्ण मिथकीय पात्र भी है। लेकिन कनुप्रिया में कनु और राधा - ब्रह्म एवं माया नहीं बल्कि साधारण नर-नारी के तुल्य जान पडते हैं। श्री सूरज पालीवाल की दृष्टि में भी "कनुप्रिया का कवि न तो भक्त है और न पुराणवेत्ता। वह इन पात्रों के केवल मिथक के रूप में ही प्रयोग करता है - निष्ठा, आस्था अथवा भक्ति से गद्‌गद होकर नहीं। इसीलिए उसकी राधा पौराणिक अथवा सूर एवं हरिऔध की राधा नहीं, सर्वथा आधुनिक राधा है। सूर और हरिऔध ने जहाँ राधा को उसका युग प्रदान किया है, वहाँ भारती ने अपनी संपूर्ण मानसिकता। यही इसकी नवीनता भी है"[2]। कनुप्रिया में राधा, कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को युग-सत्य के परिपार्श्व में व्यक्त करती है। अतः कनुप्रिया की राधा केवल प्रियतम के मिलन के लिए आकुल विरहिणी राधा नहीं है। उसका दुःख मात्र नायक से मिलने का नहीं है। उसकी वेदना के पीछे प्रेम का अभाव है। इतिहास-निर्माण के लिए निकला कृष्ण राधा को साथ नहीं लेता है। इसलिए राधा अकेली पड जाती है और शून्यता का अनुभव करती है। कनुप्रिया की राधा की खूबी यह है कि वह शून्यता और अकेलापन का अनुभव करते समय भी कृष्ण की प्रतीक्षा में अडिग खडी रहती है। इसप्रकार राधा-कृष्ण के प्रेम को धर्मवीर भारती ने कनुप्रिया में नया आयाम दिया है। युद्ध से अर्थशून्य हो जानेवाले जीवन की अभिव्यक्ति इसमें राधा के जरिए सफल ढंग से की गई है।

कनुप्रिया में राधा और कृष्ण के अतिरिक्त कोई पात्र नहीं है। कृष्ण भी राधा की स्मृति के अंग बनकर आया है। कृष्ण के अनुपस्थित होने पर भी राधा ने उससे अनेक प्रश्न पूछे हैं। वस्तुतः कनुप्रिया एक व्यक्तिकेंद्रीकृत रचना है और पात्रों के समुच्चय से मुक्त भी है।

---

१. आधुनिक प्रबन्धकाव्य संवेदना के धरातल - सं. डॉ. विनोद गोदरे, पृ. - ५१

२. वही , पृ. - ६४

मलयालम कविता में राधा-चित्रण का सामान्य परिचय :

कुमारनाशान मलयालम के मश्हूर कवि हैं। वे बीसवीं सदी की प्रारंभिक दशा के कवि हैं। उनका काव्यकाल भारतीय जनजीवन में क्रान्तिकारी रहा था। युग की धडकनों का पूरा प्रभाव आशान की तमाम कृतियों में पडा है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - वीणपूव् , नलिनी , लीला , चिंताविष्टयाय सीता , दुरवस्था, चंडालभिक्षुकी , करुणा आदि। केरल में उस समय जाति-धर्म का भेदभाव उसके चरम पर विद्यमान था। उन्होंने अपनी कविताओं में केरलीय समाज के परंपरित नियम, स्त्री-विवेचन, प्रेम, विवाह जैसी संस्थाओं के विरुद्ध आवाज उठायी है। अवर्ण समाज में जन्मे आशान को खुद अनेक पीडाएँ सहनी पडी थी। अनुभवों की ऊष्मा के साथ केरलीय समाज में कई वजह से रूपायित नवोत्थान आशान के मन में स्वतंत्रता के नूतन भावबोध का बीज बोया। उन्होंने अपनी कृतियों में अवर्णों के साथ दलित, पीडित स्त्री-समाज की उन्नति के लिए आवाज बुलन्द की। 'नलिनी' और 'लीला' इस दृष्टि से उनकी मशहूर कृतियाँ हैं। पुरुषमेधा समाज द्वारा सृजित नियमों के उल्लंघन करने का साहस नलिनी और लीला ने दिखाया। 'नलिनी' माँ-बाप द्वारा निश्चित विवाह के लिए तैयार न होकर घर छोडने का साहस दिखाती है तो 'लीला' खंडकाव्य की लीला पति की मृत्यु के उपरांत अपनी प्रेमी को तलाशने के लिए निकलती है। ये पात्र उस जमाने के ही नहीं समकालीन स्त्रियों को भी स्वतंत्रता के पाठ पढाती हैं। 'नलिनी' में नलिनी-दिवाकर का सात्विक प्रेम चित्रित है तो 'लीला' में लीला-मदन का सात्विक अनुराग।

केरल की स्त्रियों की महत्ता एवं भावगरिमा को मलयालम के कवित्रय के महान कवि वल्लत्तोल ने दर्शाया है। आदर्शों में अडिग रहनेवाले वल्लत्तोल की नायिकाएँ अहं और स्वाधिकार-बोध से पूर्ण हैं। शिष्यनुं मकनुं (शिष्य और पुत्र) में पार्वती पति की इच्छा के विरुद्ध प्रश्न करने के लिए तैयार होती हैं। 'बन्धनस्थ अनिरुद्ध' की नायिका उषा अपने पिता से खुल्लमखुल्ला कहती है कि वह अपनी मर्जी से ही परपुरुष को अपने शयन-कक्ष में बुला लायी है। ऐसा कहकर उषा ने परंपरा का उल्लंघन करके अपना अदम्य साहस एवं क्रान्ति-भावना का परिचय दिया है। पुरुष की छाया में खडी स्त्री पात्रों के बदले स्वत्व-बोध से पूर्ण नारी-पात्रों की रचना के जरिए इन कवियें ने कविता के क्षेत्र में ही नहीं सामाजिक स्तर पर भी क्रान्ति का बीज बोया है। महाकवि जी शंकरकुरुप्प ने राधा, वृन्दावन, प्रेमभिक्षा, नित्यकामुकन् (नित्यवामुक), जैसी कविताओं में राधा के माध्यम से नितांत शुद्ध प्रेमानुभूतियों की अभिव्यंजना की है। चङ्डंपुषा कृष्णपिल्ला की वसंतोत्सव, वृन्दावन, वृन्दावनत्तिले राधा (वृन्दावन की राधा) आदि कविताओं

राधयेविटे? : प्रश्नाकुलता का समाधान

सुगतकुमारी आधुनिक मलयालम काव्य-जगत के प्रमुख हस्ताक्षर है। आप समकालीन मलयालम भक्ति-साहित्य के, खासकर कृष्ण-भक्तिकाव्य के सशक्त प्रतिनिधि भी है। वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी भी हैं। पर्यावरण-संरक्षिका, केरल के उपभोक्ता-संरक्षण परिषद की अध्यक्षा, केरल राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा, मानसिक वैकल्य-ग्रस्त निराश्रित एवं गरीब मंहिलाओं का शरणस्थान ''अभय'' की संस्थापिका जैसे बहुविध धरातलों पर उन्होंने अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया है। इन सारी व्यस्तताओं के बीच भी उनकी कव्यरचना अबाध गति से चलती रहती है। वे राज्य एवं राष्ट्र स्तरीय बहुत से पुरस्कारों से विभूषित हुई हैं। केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, एषुत्तच्छन पुरस्कार, वयलार पुरस्कार, पद्मश्री पुरस्कार, सरस्वती सम्मान आदि उनमें कुछ हैं।

सुगतकुमारी की तमाम कविताओं पर टिप्पणी करते हुए ''संग्रथन'' मासिक पत्रिका के संपादकीय में लिखा है - ''सामाजिक जीवनानुभूतियों को वाणी देने में सुगतकुमारीजी की क्षमता प्रशंसनीय है। वर्तमान के प्रति असंतोष और समता पर आधारित एक स्वर्णिम युग की कल्पना उनकी कविताओं में मुखरित है। आध्यात्मिक विशुद्धि, पौराणिक लगाव, सांस्कृतिक सौरभ्य, दार्शनिक औदात्य, व्यापक राष्ट्रीयता आदि पहलुओं को आत्मसात करके श्रीमती सुगतकुमारी ने काव्य-क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाया है। उनकी कविताएँ सामाजिक चेतना की नवीन संवेदना उत्पन्न करती हैं। वैयक्तिकता, स्वच्छंदता की प्रवृत्ति, प्रकृति पर चेतना का आरोप, रागात्मकता, दुःखवाद, रहस्यात्मकता, कोमलकांत पदावली आदि भावगत एवं कलागत विशेषताएँ संपूर्ण कविताओं में प्रतिबिंबित है। .... कवयित्री के लिए भी राधा और कृष्ण विरह-पीडा के शाश्वत प्रतीक रहे हैं। .... भक्त मीरा एवं महादेवीवर्मा की दुखोपासना से सुगतकुमारी के दुःख की तुलना कर सकते हैं। .... सामाजिक समस्याओं से निरंतर संवेदित होने की वजह से उनकी कविता वैयक्तिकता के संकुचित दायरे से निकलकर विशाल सामाजिक सरोकार हासिल करती है''[1]।

भारतीय कवयों की दृष्टि में राधा विरह-वेदना के शाश्वत प्रतीक है। विरह-गान शुरू करते वक्त या उससे पहले ही राधा-कृष्ण का आदिबिंब अपना मुरलीरव शुरू करेंगे। ये बिंब पौराणिक होने पर भी सिद्धहस्त कवि के लिए नित-नवीन भी हैं। सुगतकुमारी एक सिद्धहस्त कवि हैं। उनकी कविताओं में

---

१. संग्रथन - संपादकीय , पृ. - ३, ४

ने ''गीतगोविंद'' के द्वारा राधा को जन-मानस में प्रतिष्ठित किया था। उसी तरह मेल्पत्तूर नारायणभट्टतिरिप्पाट् ने ''नारायणीयम्'' में राधा को विशिष्ट स्थान दिया है। भट्टतिरिप्पाट् ने ''समन्तपंचकम् '' में राधा-कृष्ण के मिलन का वर्णन किया है। कवयित्री की नवीन उद्भावना इसीमें है कि उन्होंने अकेली और अप्रत्यक्ष राधा को मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु जैसे महानुभावों के रूप में पुनरुत्थान दिया है। ऐसा करते वक्त कवयित्री ने औचित्य को ठेस पहुँचाये बिना कल्पना और यथार्थ का सम्मिलन किया है। राधा का प्रेम अनन्य होता है। इसीलिए उसकी तलाश भी अनन्य होती है। राधा के उस मिजाज को कवयित्री भारत की तमाम स्त्रियों की प्रेम-तलाश में देखती है। राधा के प्रेमान्वेषण को भारत की तमाम स्त्रियों के प्रेमान्वेषण से संबद्ध कराने का अपूर्व कार्य लेखिका ने किया है।

प्यार करनेवालों के लिए सबकुछ त्यागने और समर्पित करने की सहजात क्षमता स्त्रियों को वर्द्धित मात्रा में होती है। इस विषय में वह पुरुष से बहुत आगे है। पुराणों की खोजबीन एवं नये नये प्रतीकों के गठन के जरिए कवि-लोग स्नेह या प्यार के पुनरुत्थान का प्रयास करते हैं। राधा-कृष्ण के पौराणिक प्रेम-प्रसंग की अभिव्यक्ति इस श्रेणी की एक कडी है। भावात्मक स्तर पर सुगतकुमारी की काटाण् (वन है) शीर्षक कविता का विस्तार है राधयेविटे (राधा किधर है)। प्रत्येक नारी की अंतरात्मा में प्रेम-मूर्ति राधा विद्यमान है। काटाण् (वन है) की पंक्तियाँ हैं - तीरेदरिद्रमेन नाट्टिलेयेतोरु / नारियुं राधिकयल्लियुल्लिल। (अतिगरीब मेरे देश ा के/ हरेक नारी मन ही मन राधा है नहीं?) (अंपलमणि-सुगतकुमारी, पृ-१०५) राधा को कवयित्री ने अनंतकाल से भटकनेनाली विरहिणी का रूप भी प्रदान किया है। प्रेम के संयोग या वियोग पक्ष का उद्घाटन इसमें हुआ है।

पूर्णता-प्राप्ति की अदम्य लालसा हरेक इनसान में होती है। इस तृष्णा को अभिव्यक्त करनेवाला भाव-शिल्प राधयेविटे को ऊँचाई पर प्रतिष्ठित करता है। डॉ. एम. लीलावती इसमें वर्णित कृष्णतृष्णा में पूर्णतातृष्णा देखती है। कवयित्री द्वापरयुग की राधा की प्रतिछवि खेत-खलिहानों में काम करनेवाली सेत्रियों, बकरियों को चरानेवाली देहाती महिलाओं, पानी लेने केलिए घटा लेकर दूर दूर तक चलनेवाली माताओं, चाय के बाग महुं पत्तियाँ तोडनेवालियों, आँसू रोकनेवालों और सडकों पर बकवास करती हुई भटकनेवाली उनमादिनियों में भी देखती है। ये सारे पात्र कुछ न कुछ ढूँढती हैं। उनके मन में भी राधा की तरह भेंट की लालसा होती है। मलयालम की मशहूर आलोचक डॉ. एम. लीलावती लिखती हैं - ''राधयेविटे शीर्षक लंबी कविता राधा-माधव प्रणय-कथा के देश-कालातीत सौंदर्य-मूल्य को मलयालम भाषा की अद्वितीय देन है। यह सुगतकुमारी की अन्य राधा-काव्यों से भिन्न होती है। कविता में पहले एक व्यक्ति के रूप में पाठकों के सामने उपस्थित होनेवाली राधा फिर युग-युगों के अवतार के रूप में और

राधा को ढूँढने निकलती हैं। कोई भी उसे नहीं दीखती है। कवयित्री हवा से और कातर मनवालों से राधा को ढूँढने निकलने की प्रार्थना करती है। हवा और मन स्वच्छन्द होते हैं। हवा की तरह है मन और मन की तरह है हवा। स्थल-काल की चिंता किये बिना आसानी से और आजादी से विचरण करने में वे सक्षम भी हैं। किसी न किसी प्रकार राधा से भेंट करने की लालसा से कवयित्री इनका साथ लेती है।

राधयेविटे के खण्ड दो, तीन और चार में राधा की स्मृतियों के वर्णन होते हैं। कृष्ण के साथ बिताये केलि-क्षणों के रंगीन चित्र इनमें प्रस्तुत किये हैं। कृष्ण ने रात में राधा को आलिंगन करके के चुंबन दिया और "मैं जाता हूँ" मात्र कहकर गया। वापस आने का सांत्वनापूर्ण एक शब्द भी उसने राधा से नहीं बताया। कृष्ण के अप्रत्यक्ष होने पर राधा भी अप्रत्यक्ष हो जाती है। अगले दिन आँसू बहाती, बाल बिखरी, मैले वस्त्र पहनती, मुख लटकती, रथ के पहियों के चिह्न देख-देखकर हरि-हरि जपती हुई दीवानी-सी जानेवाली नारी को किसी ने देखा था। उस व्यक्ति ने यह भी कहा कि राधा का प्रेम-पात्र कृष्ण उसकेलिए आभीर नहीं, राजकुलजात और ईश्वर है; कृष्ण का पीतांबरांचल और राधा का खुरदरा वस्त्रांचल आपस में बंधना असंभव है। एक का जन्म दुनिया पर शासन करने के लिए हुआ है तो दूसरे का सिर्फ निश्छल प्रेम करने को। सत्ता और संवेदना के बीच समझौता नहीं के बराबर है। कवयित्री ने यहाँ सत्ताधारियों में मानवीयता के अंश की कमी की ओर इशारा किया है। साथ ही साथ सत्ताधारी पुरुष और सत्ताविहीन मासूम नारी के बीच का संबन्ध भी शाश्वत नहीं रहेगा। राधा के विरह के पहले दिन के इस वर्णन से विरह-स्मृतियों की पेटी खुलती है।

राधा वहाँ पहुँचती है जहाँ वह कृष्ण से मिलती थी। एक दिन संयोग-काल में सुबह-सुबह राधा जब यमुना में नहाने जा रही थी, तब गोपिकाओं ने उसकी ओर देखकर हँसने लगी। क्योंकि राधा उस समय पीतांबरधारी थी। कृष्ण उस दिन सुबह राधा का नीला कपडा पहनकर गायों को चराने गया था। ध्यान देने की बात यह है कि राधा-कृष्ण के रति-वर्णन में अश्लीलता का पुट रंच-मात्र भी आने का मौका कवयित्री ने नहीं दिया है। रतिक्रीडा के उदात्त वर्णन की उत्तम मिसाल यहाँ देख सकते हैं। कविता के तीसरे खण्ड में राधा, कृष्ण की शरारतों का स्मरण करती है। एक दिन दूध का घटा सिर पर रखकर राधा वन से जा रही थी । तब कृष्ण ने किसी पेड की आड में से उस घटे पर पत्थर मारा था। घटा फूट गया और राधा दूध में नहा गयी। नाराजगी में खडी राधा के सामने उस समय कृष्ण पेड-पत्तों के पीछे से आकर प्रत्यक्ष हुआ और बहुत प्यार के साथ उसे चूम लिया। तब राधा अत्यंत आत्मविभोर हो गयी और उसकी हालत दूध में नहाकर शहद में जलनेवाली की तरह हो गयी थी। कृष्ण के प्रेम रूपी शहद में ज्वलित राधा पेड के नीचे खडी होकर इस घटना का स्मरण करती है। उसी तरह वह यमुना में कृष्ण के साथ हुई जल-क्रीडा एवं झूला झूलने की भी याद करती है।

से व्यंजित करने में असमर्थ अनुभूति की तरलता का अनायास चित्रण कवियित्री ने हरेक खण्ड में किया है।..... भाव-ध्वनिपूर्ण सुन्दर वर्णन से काव्य को शब्दों से रचित वृन्दावन बनाया है "[1]।

पाँचवीं खण्ड में हिमालय का वर्णन होता है। विरहिणी राधा भटक-भटककर हिमालय की तराइयों में पहुँचने की संकल्पना की गयी है। हिमालय रौद्र एवं शांत भाव का संगम-स्थान है। वहाँ राधा अर्धनारीश्वर का रूप देखने और उसकी परिक्रमा करने की कल्पना भी कवयित्री ने की है। अर्धनारीश्वर और हिमालय के एकभाव का मनोरम वर्णन भी इस खण्ड में हुआ है।

'राधयेविटे?' के छठे खण्ड में हरि-हरि जपती हुई हिमालय में भटकनेवाली राधा का वर्णन होता है। हिमाद्रिश्रृंग से वह कहती है -" हे नाथ, मैं एक तुच्छ, दूधवाली परित्यक्ता हूँ। फिर भी मैं दो-चार दिन के लिए विश्व-सौभाग्य की रानी थी "। हिमालय में महेश्वर को संबोधित करती हुई वह गाती है- "प्रभो, अपनी चाँदनी के टुकडे को नीले मोर-पंख में बदल दो / झूमती जडा में नदी के बदले नवमालिका की माला को ही रखनी है न? नील-कंठ में कपाल-माला के बदले वनमाला पहननी है/ कर के परशु के बदले बाँसुरी पकडेंगे न / तब यह राधा आप पर निछावर हो जाएगी " राधा के विरह-वर्णन की यह विभावना अत्यंत पुलकित करनेवाली है। कवयित्री की मौलिक उद्भावना यहाँ भी दर्शनीय है कि विरह-वेदना से भटक-भटककर थकनेवाली राधा हाथ पसारकर रुक जाती है। विरहाग्नि में तपकर अग्नि-गोल बना राधा-चित्त फूटकर हजारों टुकडों में बिखर गया है और बिखरे हुए टुकडे देश के कोने-कोने में पडकर नये-नये बीज के रूप में फूट निकला है। विविध युगों में उपस्थित मीरा, चैतन्य महाप्रभु, आण्डाल और कुरूरम्मा को राधा-चैतन्य से निकले बीज का अंश बताया गया है। ये सारे पात्र विरह-वेदना की पीडा से गुजरनेवाले हैं। युग-युगों से उठनेवाली इनकी पुकार राधा की ही पुकार है। मीरा के पदों और चैतन्य की वाणियों को भी कवयित्री ने उद्धृत किया है। इन अवतारों को विरह-वेदना झेलनेवालों केरूप में ही नहीं बल्कि निश्छल एवं निस्वार्थ प्रेम की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इनमें मीरा, आण्डाल, कुरूरम्मा जैसी स्त्रैण मूर्ति ही नहीं चैतन्य महाप्रभु जैसे पुरुषाकार के गायक भी होते हैं। राधा के पुनरवतार के माध्यम से कलंकहीन प्यार की पुनःप्रतिष्ठा की गयी है। यह एक उदात्त संकल्पना है।

---

१. मलयाल कविता साहित्यचरित्रं - एम्. लीलावती , पृ - ४३७

किसी की गुलाम नहीं मानती है। वह अपनी किस्मत को कोसती भी नहीं है। उसकी शख्सियत में अद्‌भुत विरोध का समन्वय हुआ है। अकृत्रिम प्रेम के सामने के सामने अपने को निछावर करनेवाली राधा, आत्मबोध एवं आत्मगौरव से पूर्ण भी है। जिस तरह उसमें अहं के हवन से उत्पन्न प्रेम की दीप्ति और आर्द्रता निहित है। अहं से सिर सीधा करनेवाले गौरव की उज्ज्वलता भी होती है। हिमालय में पहुँची राधा परम शिव से कहती है - "हे नाथ, हर ! मैं राधा, परित्यक्ता / गरीब गोप-बाला, तो भी / चार दिन की रानी रही विश्व के सारे सौभाग्य की"[1]। वियोगाग्नि में जलते समय भी राधा को अपने संयोगकालीन अनुभवों पर कोई पश्चाताप नहीं होती है। उन अनुभवों को वह अपने व्यक्तित्व को चार चाँद लगानेवाले मानती हैं। वह पहचानती है कि "पीतांबरांचल"और "खुरदरा वस्त्रांचल" के बीच का गाँठ शाश्वत नहीं बनेगा। राधा भलीभाँति समझती है कि कृष्ण के कर्म, निर्णय और दायित्व के वेगगामी रथ-चक्र के सामने उसकी विरह-वेदना को कोई स्थान नहीं है। कृष्ण की खोज में निकली राधा अंत में अपने मन को पत्थर समान बनाती है और आँसू रोकती हुई कहती है -" हे कनु, राधा यह स्वाभिमानी / अब तेरे सम्मुख हाथ फैलाएगी नहीं / जिस तरह दूध का घटा मैं ढोती थी / उसी तरह दुःख का घटा भी मैं स्वयं ढोऊँगी/ तेरे अनुराग का पात्र नहीं हूँ तो मैं / तेरी करुणा का पात्र भी नहीं चाहूँगी / ..... तेरी राधा आज बहुत बदली है, देखने पर तू इसे पहचानेगा नहीं"[2]। इसप्रकार राधा को अपना स्वत्व कायम रखने की प्रबल इच्छा रखनेवाली आधुनिक नारी का स्वरूप भी कवयित्री ने दिया है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि सुगतकुमारी की राधा का कृष्ण-प्रेम आध्यात्मिक प्रेम के दायरे से मुक्त एक इन्द्रियजन्य अनुभूति भी है। राधा-कृष्ण के जरिए स्त्री-पुरुष-प्रेम को निर्मल करके अलौकिकता के आसन पर बिठाना कवयित्री का लक्ष्य नहीं रहा है। वस्तुतः कविता में अनुराग से पूर्णत्व की संकल्पना की गयी है। अनुराग भौतिक या इन्द्रियजन्य अनुभूति है। ऐसा विचार होने के कारण कवयित्री कृष्ण के संबन्ध में अपना प्रश्न भी बिलकुल भौतिक मानती है। श्री पी.पी.रवीन्द्रन ने कहा है कि "भक्ति, रति एवं रचनाकर्म की भौतिकताओं का सान्द्र सम्मिलन सुगतकुमारी की कविता राधयेविटे? में हुआ है"[3]। अलावा इसके वे यह भी सिद्ध करते हैं कि राधयेविटे? पुरुषमेधा चिंतन को जोर देनेवाली कविता है; भक्ति के अधीनता-सिद्धांत को बढावा मिलने के बहुत पाठ-आख्यान-संदर्भ इसमें है। लगता है कि श्रीपी.पी.रवीन्द्रन मार्क्सवादी नजरिए से प्रेम-योग को आँकने से इस नतीजे पर पहुँचते हैं। वस्तुतः राधा

---

१. राधयेविटे? , पृ. - ४९

२. वही , पृ. - ६१

३. सांस्कारिकविमर्शनवुं मलयाल भावनयुं - सं. षाजी जेकब , पृ. - २०० , २०३, २०६

निष्कर्ष

सार्वदेशिक और सार्वकालिक संबन्ध को नये सिरे से आँकने का कार्य ''कनुप्रिया'' में हुआ है । सामाजिक बन्धनों से पीडित स्त्रियाँ अपने मन के सहज भावों और आग्रहों को व्यक्त नहीं कर पाती। उन्मुक्त आचरण की इच्छा मनुष्य में नैसर्गिक है । कुनप्रिया (रोमानियत) हरेक नारी के अन्तर्मन में रहती है । लेकिन अनेक कारणों से वह उसे बाहर प्रकट करने में असमर्थ है । भारती ने कनुप्रिय के माध्यम से उन युवतियों को वाणी दी है जो सामाजिक वर्जनाओं के कारण अपने मन की भावनाएँ व्यक्त न कर सकती ।

कृष्ण के युद्ध में भाग लेने से उनके प्रेम में दरार पड जाती है । राधा के मन में अनेक प्रश्न उठ खडे होते हैं । उसकी यह प्रश्नाकुल मानसिकता अस्तित्वबोध की तडप है ।''कनुप्रिया'' की राधा अपने स्वत्व को पहचानती है । उसे अपने महत्व की पूर्ण जानकारी होती है । अकेले कृष्ण के इतिहास-निर्माण को कनुप्रिया अर्थहीन मानती है । राधा को इतिहास में गूँथने से कृष्ण हिचकता है । इसपर राधा प्रश्नचिह्न लगाती है । यहाँ राधा आत्मबोध से परिपूर्ण आधुनिक नारी का रूप धारण करती है । यही इस रचना की खासियत है और इसे अलग मिजाज प्रदान करता है। ''कनुप्रिया'' की राधा केवल प्रियतम के मिलन के लिए आकुल विरहिणी राधा नहीं है। उसका दुःख नायक से न मिलने का मात्र नहीं है । उसकी वेदना के पीछे सहज प्रेम की आकांक्षा है ।

हिन्दी कवि डॉ.धर्मवीर भारती की '' कनुप्रिया''(१९५९) और मलयालम की कवयित्री सुगतकुमारी की 'राधयेविटे?'(१९९५) के भाव-बोध में बहुत कुछ समानताएँ होती हैं। दोनों कृतियों के केंद्र में राधा है और वह प्रेम की दीवानी भी है। इन कवियों की राधिकाएँ प्रेम के महत्व को पहचानती हैं। वे प्रेम की असमाप्त तृष्णा के प्रतीक हैं। कृष्ण के सामने अपने को संपूर्ण रूप से समर्पित करने के दृश्यों के अंकन उन्हीं के स्मृति-बन्धों के माध्यम से किये गये हैं। ये स्मृति-चित्र पाठक के सामने लगभग समान रूप से उपस्थित होता है। प्रेम की दीवानगी में भी दोनों कवियों की राधिकाएँ अपनी अस्मिता गिरवी नहीं रखती हैं। स्वत्व-बोध और आत्म-बोध से पूर्ण भारती की राधा इतिहास-निर्माण के लिए निकले कृष्ण को कभी-कभार दिशा-बोध देने का कार्य भी करती है। ''कनुप्रिया'' की राधा का जुझारू एवं आत्मसम्मानी व्यक्तित्व राधयेविटे? की राधा की शख्सियत से एक कदम आगे है।

''कनुप्रिया'' और 'राधयेविटे?' में कृष्ण के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होते हैं। राधा की तरल स्मृतियों के जरिए वह पाठक के सामने उपस्थित होता है। राधा का स्वप्न, विरह, भक्ति एवं क्रीडा का पात्र है कृष्ण। राधा की स्मृति में कृष्ण के ये सारे रूप उभर आते हैं। वृन्दावन छोडकर कृष्ण के जाने पर राधा

सहायक ग्रन्थ-सूची

मौलिक :

१. कनुप्रिया - डॉ.धर्मवीर भारती
भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-१
अष्टम सं. - १९८४

२. राधयेविटे - सुगतकुमारी
डी. सी. बुक्स, कोट्टयम-१,केरल
छठा सं. - २०११

आलोचनात्मक :

१. आधुनिक प्रबन्धकाव्य संवेदना के धरातल - सं. डॉ. विनोद गोदरे
वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-२
प्र. सं. -१९८५

२. कनुप्रिया एक मूल्यांकन - सुलभा बाजीराव पाटील
पंचशील प्रकाशन, जयपुर-३
प्र. सं. -१९८१

३. क्योंकि समय एक शब्द है - रमेश कुंतल मेघ
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-१
प्र. सं. -१९७५

४. काव्यानुशीलन आधुनिक अत्याधुनिक - डॉ. कुमार विमल
ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड, पटना-४
सं. -१९७०

५. धर्मवीर भारती - सं.प्रभाकर श्रोत्रिय

६. धर्मवीर भारती - सं. लक्ष्मणदत्त गौतम
कुमार प्रकाशन, मोती नगर, नयी दिल्ली-१५
प्र. सं. -१९७४

पत्र-पत्रिकाएँ :

अक्षरा , अप्रैल-सितंबर १९९१

संग्रथन , अप्रैल २०१३

मलयालमनोरम (दैनिक), ३१ दिसंबर १९९५